Roll No. ....

(05/25)

19212

M. A. EXAMINATION

(For Batch 2022 & Onwards)

(Second Semester)

HINDI

MA/HIN/2/CC6

भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन काव्य

Time : Three Hours *Maximum Marks* : 70

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं । निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×2=10

(क) कबीरदास की रहस्य भावना

(ख) नागमती का विरह वर्णन

(ग) तुलसीदास की भक्ति-भावना

(घ) कवि देव के काव्य में भक्ति और वैराग्य

(ङ) कवि भूषण की वीर-भावना ।

2. "कबीर के विचार, उपदेश आदि आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने तत्कालीन युग में थे ।" इस कथन की समीक्षा कीजिए । 15

अथवा

जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' के आधार पर नागमती की विरह-भावना पर प्रकाश डालिए ।

3. भ्रमरगीत के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन कीजिए । 15

अथवा

'कवितावली' में अभिव्यक्त लोकमंगल की भावना को स्पष्ट कीजिए ।

4. घनानन्द 'प्रेम की पीर' के कवि हैं, स्पष्ट कीजिए।

15

अथवा

बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, सिद्ध कीजिए।

5. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

$3 \times 5 = 15$

(क) "जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि ॥
पाँणी ही ते हिम भया, हिम ह्वै गया बिलाइ।
जो कुछ था सोई भया, अब कछु कह्या न जाइ ॥"

अथवा

पिउ वियोग अस बाउर जीऊ, पपीहा तस बोलै
पिउ पीऊ ।

अधिक धाम दगधै सो रामा, हरि जिउ लै सो
गएउ पिय नामा ।

बिरह बान तस लाग न डोली, रकत पसीज
भीजि तन चोली ।

सखि हिय हेरि हार मैन मारी, हहरि परान तजै
अब नारी ।

खिन एक आव पेट महं स्वाँसा, खिनहि जाइ
सब होइ निरासा ।

पौनु डोलावहिं सींचहि चोला, पहरक समुझि
नारि मुख बोला ।

प्रान पयान होत केइँ राखा, को मिलाव चात्रिक
कै भाखा ।

आह जो मारी विरह की, आगि उठी तेहि
हाँथ ।

हँस जो रहा सरीर महँ, पाँख जरे तव थाक ।''

(ख) "अँखियाँ हरि दरसन की भूखी ।

कैसे रहें रूप रस राँची, ये बतियाँ सुनि रूखी।

अवधि गनत इकटक मग जोवत, तब एती नहिं झूखी ।

अब इत जोग-संदेसन ऊधौ अति अकुलानी दूखी।

बारक वह मुख फेरि दिखायौ, दुहि पय पिवत पतूखी ।

सूर सिकत हठि नाव चलाओ, ये सरिता है सूखी।"

अथवा

"झूठो है झूठो है, झूठो सदा जगु, संत कहंत जे अंतु लहा है ।

ताको सहै सठ ! संघट कोटिक, काढ़त दंत, करंत हहा है ।

जान पनी को गुमान बड़ो, तुलसी के विचार

गँवार महा है ।

जानकी जीवनु जान न जान्यौ, तो जान कहावत

जान्यौ कहाँ है । ''

(ग) ''कनक कनक तैं सौ गुनी मादकता अधिकाइ ।

उहिं खाएँ बौराइ, इति वा पाएँ ही बौराइ ॥

स्वारथु, सुकृतु न, श्रमु वृथा, देखि विहंग विचारि ।

बाज, पराए पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि ।''

अथवा

''मीत, सुजान अनीत करौ जिन, हा हा न

हूजियै मोहि अमोही ।

डीठि कौ और कहूँ नहिं ठौर, फिरी दृग रावरे

रूप की दोही ।

एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहे बसि

प्रान-बटोही ।

हौ घनआँनद जीवन मूल दई, कित प्यासनि

मारत मोही ।"

❖❖❖❖❖❖❖